वैश्विक खाद्यान्न संकट

विगत तीन वर्षों (2006–09) में दुनिया के गरीब मुल्कों की गरीब आबादी को साद्यान्न संकट का सामना करना पड़ा है और यह आगे जारी है। विश्व बैक, खाद्य एवं कृषि संगठन (फूड एण्ड एग्रीकल्चरल ऑर्गेनाइजेशन) के अनुसार 1999 में कुपोषण के शिकार लोगों की संख्या लगभग 88ण्5 करोड़ थी जो 2009 में भी उतनी ही बनी हुयी है। यह आबादी भी गरीब देशों की गरीब जनता है। पिछले तीन वर्षों में वैश्विक पैमाने पर खाद्यान्नों (गेहूं, चावल, मक्का) की कीमतों में जबर्दस्त उछाल ने इससे भी कहीं बड़ी आबादी के सामने भुखमरी का संकट पैदा कर दिया।

विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार (2008) 2005–08 के बीच वैश्विक स्तर पर खाद्यान्नों के दामों में 83% उछाल आयी है। खाद्यान्न एवं कृषि संगठन के अनुसार मार्च 2007 की तुलना में मार्च 2008 में गेहूं, सोयाबीन, चावल और मक्का के दामों में क्रमशः **130%, 87%, 74%,** और **31%** का उछाल आया है।

मार्च 2007 से मार्च 2008 के बीच खाद्यान्नों में महगाई दर :

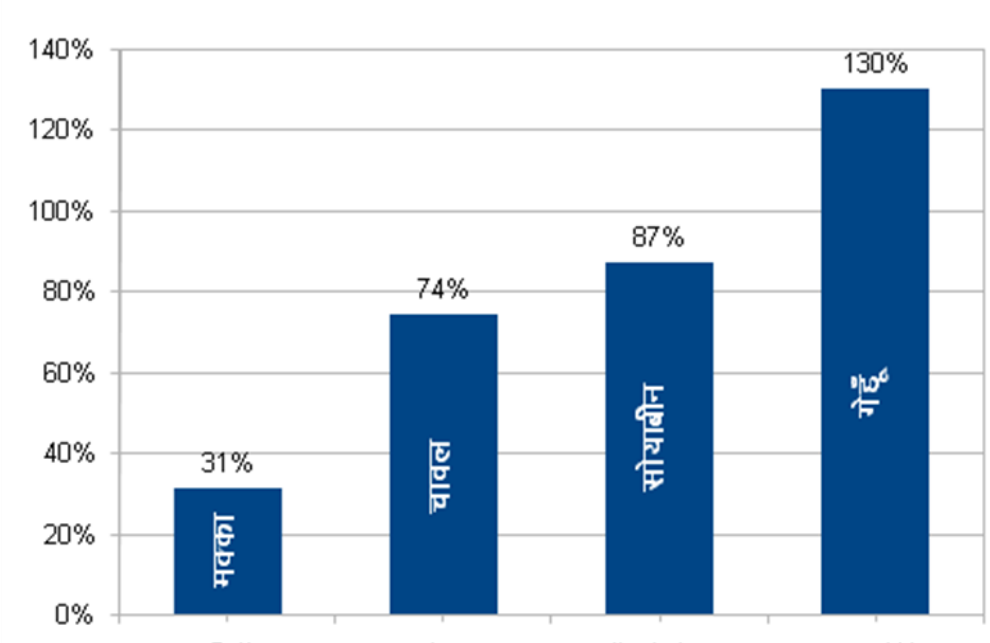

खाद्यान्न संकट के कारण 2007–08 में दुनिया के कई गरीब देशों में दंगे, विरोध प्रदर्शन हुए। खाद्यान्नों की बढ़ी कीमतों के कारण इन्हें खरीदने में असमर्थ जनता ने, इन्हें हासिल करने के लिए लूटपाट की। गोदामों में अनाज मौजूद था लेकिन उसकी कीमतें लोग नहीं अदा कर सकते थे, इसलिए उन्हें भूखे मरना था। एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका महाद्वीप के लगभग 20 देशों में ये घटनाएं हुयीं। यमन, मिश्र, सोमालिया, सेनेगल, मोजाम्बिक, इण्डोनेशिया, बांग्लादेश, हैती, आईवरी कोस्ट, फिलीपीन्स, कैमरून, बुरकीना फासो इनमें प्रमुख हैं। उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप
के मैक्सिको में भी यही स्थिति उत्पन्न हुयी।

इसके साथ ही दुनिया के स्तर पर इस संकट के कारणों (तात्कालिक और दीर्घकालिक), इसकी गंभीरता पर चर्चा शुरू हुयी। साम्राज्यवादियों के सरगना (तात्कालिक) जॉर्ज बुश ने इसके लिए भारत और चीन की जनता के अधिक उपभोग को जिम्मेदार ठहराया। साम्राज्यवादी संस्थाओं ने कुछ प्राकृतिक आपदाओं (बाढ़, सूखा) को जिम्मेदार माना। इनसे खाद्यान्न समस्या के मूल में जाने की उम्मीद नहीं की जानी चाहिए।

वर्तमान खाद्यान्न संकट, बीसवीं सदी से लेकर अब तक साम्राज्यवाद के युग में कृषि के विकास का परिणाम है। इस संकट के अलग–अलग आयामों को साम्राज्यवादी युग की आम गतिकी में ही देखा जाना चाहिए, तभी सही समाधान हासिल हो सकता है।

प्रस्तुत लेख में हम निम्न बिन्दुओं के तहत इस समूचे सवाल पर चर्चा करेंगे।

1. औद्योगिक क्रांति से पूर्व कृषि का विकास
2. औद्योगिक क्रांति व मोटर यान्त्रीकरण का कृषि पर प्रभाव
3. उपनिवेशों व बाद में स्वाधीन तीसरी दुनिया के देशों में कृषि का विकास व समस्याएं।
4. वैश्वीकरण के दौर में तीसरी दुनिया की कृषि
5. बायो ईंधन और उपभोग के लिए घटता खाद्यान्न
6. दुनिया के स्तर पर उपभोग (खाद्यान्न) में परिवर्तन और बढ़ता अन्तर
7. वैश्विक स्तर पर कृषि में एकाधिकारी कम्पनियों का वर्चस्व
8. खाद्यान्नों में बढ़ती सट्टेबाजी

1. औद्योगिक क्रांति से पूर्व कृषि का विकास

मानव समाज में खेती का इतिहास लगभग **10** हजार वर्ष पुराना है। शिकार और संग्रहकर्ता के स्थान पर पृथ्वी के अलग–अलग हिस्सों की भौगोलिक दशाओं के अनुरूप पशुचारक समाज और झूम खेती (काटो और जलाओ) पर आधारित समाज अस्तित्व में आये। झूम खेती प्रणाली सबसे अधिक समय तक प्रचलित रही। जंगलों के भारी कटाव व बहुत कम पैदावार साथ ही नयी प्रणालियों के अस्तित्व में आने के साथ इसका चलन घटता गया।

कालान्तर में (ईसा पूर्व **5000** से **10000** वर्ष पूर्व) भौगोलिक दशाओं के अनुरूप अलग–अलग कृषि प्रणालियां विकसित हुयीं। पश्चिमी एशिया और मिश्र में नदियों के जल और बाढ़ के जल पर आधारित द्रवचालित कृषि प्रणाली, मानसून वाले इलाकों में धान की खेती (जहां जमीन इस मौसम में पानी में डूबी रहती थी), इन्डस घाटी (पेरू) में बाढ़ के जल के आधार पर द्रवचालित प्रणाली, वर्षा पर आधारित अनाज उत्पादन (उत्तर पश्चिम यूरोप) ... आदि। इन प्रणालियों में कालान्तर में (लगभग **3000** वर्ष ईसा पूर्व) लकड़ी का हल और जानवरों की शक्ति को उपयोग में लाया जाने लगा। इससे उत्पादकता में खासी बढ़ोत्तरी हुयी। बाद में तांबे और लोहे की खोज, धातु गलन की खोज ने अधिक उत्पादक कृषि औजारों को जन्म दिया। कृषि में पशुओं का इस्तेमाल बढ़ा, आवागमन के साधनों के लिए लकड़ी से निर्मित गाड़ियों का निर्माण हुआ। दस्तकारी के विकास ने इसमें अहम् भूमिका निभायी।

यूरोप में **16**वीं शताब्दी के दौरान कृषि प्रणाली में खासा बदलाव आया। जहां पहले जमीन के एक हिस्से को परती छोड़ दिया जाता था, उसके स्थान पर एक से अधिक फसलें उपजायी जाने लगी। इससे उत्पादन में बढ़ोत्तरी होने लगी।

यही यह ध्यान देने योग्य है कि नयी कृषि प्रणालियों के अस्तित्व में आ जाने के बावजूद पुरानी प्रणालियां समाप्त नहीं हो गयी। बल्कि वे किसी न किसी हद तक आज भी कायम हैं। पूर्व के कालों में नयी तकनीक का प्रसारण नहीं हो सकता है (आवश्यक जानकारी, यातायात के साधनों का अभाव)।

एक आकलन के अनुसार **(A History Of World Agriculture By Marcel MAZOYER and Laurance Roudart)**

19वीं शताब्दी के मध्य तक अलग–अलग प्रकार की कृषि उत्पादन प्रणालियों में प्रति कर्मकर उत्पादकता को लेखा–जोखा इस प्रकार है।

कृषि प्रणाली	महत्तम उत्पादकता
1–मानव शक्ति के प्रयोग पर आधारित (5000 से 3000 ई. पूर्व)	
a. जंगलों व अन्तर ऊष्ण कटिबन्धीय सवाना प्रदेश में वर्षा आधारित खेती	10 कुन्तल (1 हेक्टेयर/प्रति कर्मकर X 10 कुन्तल)
b.मानव शक्ति द्वारा सिंचित खेती व मानसून वाले इलाके में धान की खेती (एक फसल)	10 कुन्तल (0.5हेक्टेयर/प्रति कर्मकर X 20 कुन्तल)
2–प्रारम्भिक हल, जानवरों की शक्ति के इस्तेमाल पर आधारित (3000 से 1000 वर्ष ई.पूर्व)	
a. जसमें जमीन को परती छोड़ा जाता है	18 कुन्तल (3हेक्टेयर/प्रति कर्मकर X 6 कुन्तल)
b. सिंचित इलाकों व मानसून वाले इलाके में धान की खेती (एक फसल)	20 कुन्तल (1हेक्टेयर/प्रति कर्मकर X 20 कुन्तल)
3–लोहे के इस्तेमाल से बने बेहतर हल,(1000 वर्ष ईसा पूर्व से 15 शताब्दी) जानवरों की शक्ति के इस्तेमाल पर आधारित	
a. जिसमें जमीन को परती पर छोड़ा जाता था	30 कुन्तल (5 हेक्टेयर/प्रति कर्मकर X 6 कुन्तल)
b. सिंचित व मानसूनी इलाकों में धान की खेती (दो फसलें)	40 कुन्तल (1हेक्टेयर/प्रति कर्मकर X 20 कुन्तल X 2 फसलें)
4– बेहतर हल, जानवरों की शक्ति के इस्तेमाल पर आधारित खेती जिसमें जमीन को परती नहीं छोड़ा जाता था (16वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य)	50 कुन्तल (5हेक्टेयर/प्रति कर्मकर X 10 कुन्तलं)

औद्योगिक क्रांति से विभिन्न कृषि प्रणालियों में प्रति कर्मकर उत्पादकता में अन्तर मौजूद है। सबसे कम और सबसे अधिक उत्पादकता वाली प्रणालियों में अनुपात **1:5** है।

2. औद्योगिक क्रांति व मोटर यान्त्रिकरण का कृषि पर प्रभाव

औद्योगिक क्रांति ने कृषि का यान्त्रिकरण कर खास विकास किया। **16**वीं से **19**वीं सदी के मध्य में पश्चिमी यूरोप में जमीन को परती छोड़ने के स्थान पर कई फसलें पैदा करने की शुरुआत हुयी। इसने उत्पादकता में बढ़ोत्तरी को जन्म दिया। इससे यह संभावना पैदा हुई कि एक बड़ी आबादी को कृषि कर्म से मुक्त किया जा सकता है। इसने औद्योगिक क्रांति के लिए आधार मुहैय्या कराया। उद्योगों के विकास ने अपनी बारी में नयी मांगें पैदा की। उद्योग और कृषि ने एक दूसरे के विकास में पूरक की भूमिका निभायी।

19वीं शताब्दी के मध्य में कृषि के लिए भांति–भांति के नये यंत्रों का विकास हुआ। लोहे और स्टील के विकास ने धातु के हल, हैरो, थ्रेसर, रीपर ... आदि यंत्रों का विकास किया। इसने कृषि से और अधिक आबादी को बाहर धकेल दिया साथ ही प्रति कर्मकर उत्पादकता में खासी बढ़ोत्तरी को जन्म दिया।

औद्योगिक क्रांति ने आवागमन के साधनों में (रेल, रोड, स्टीम इंजन) क्रांतिकारी बदलाव कर दिया। कृषि के उत्पादों की बिक्री के लिए बड़े बाजार उपलब्ध हो गये। इसी के साथ चिली, पेरू की उर्वरक की खदानों (फॉस्फेट, नाइट्रेट, पोटाश) का दोहन सम्भव हो गया। इसी के साथ इनका उत्पादन भी आरम्भ हो गया।

अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड ... जो कभी उपनिवेश रहे थे, में कृषि का तीव्र विकास हुआ। यहां यूरोप से आकर ही आबादी बसी थी। यूरोप के उद्योगों के लिए यह अच्छा बाजार था। अपनी बारी में यहां पैदा हुआ अनाज, पशु उत्पाद यूरोप की तुलना में कहीं सस्ते थे। इनका निर्यात यूरोप में हुआ। अमेरिका से बड़े पैमाने पर गेहूं का निर्यात आस्ट्रेलिया–दक्षिण अफ्रीका–दक्षिण अमेरिका से इन का निर्यात, अमेरिका–अर्जेन्टीना–आस्ट्रेलिया से मांस का निर्यात ने यूरोप में इनके दामों में भारी गिरावट पैदा कर यूरोप के देशों में इसके प्रति अलग–अलग प्रतिक्रिया व्यक्त हुयी। कुछ देशों ने आयात पर (जर्मनी, फ्रांस) भारी टैक्स लगाकर अपनी कृषि को बचाया, डेनमार्क में पशु उत्पादों को बढ़ावा दिया गया, ब्रिटेन में सस्ते अनाज ने उद्योगों के विकास में भूमिका निभायी।

19वीं सदी के अंत तक प्रति कर्मकर उत्पादकता **100** कुन्तल (**10** हेक्टेयर प्रति कर्मकर **X 10** कुन्तल) तक पहुंच गयी। इस समय दुनिया के स्तर पर सबसे कम और सबसे अधिक उत्पादकता अनुपात **1:10** हो गया।

जानवरों की शक्ति पर आधारित खेती के यान्त्रिकरण ने बहुत कम समय में ही आधुनिक देशों की बड़ी आबादी को कृषि कर्म से बाहर धकेल दिया। बाहर धकेले गये लोगों को उद्योगों में श्रमिकों की हैसियत से शामिल कर दिये गये।

20वीं शताब्दी में कृषि में व्यापक बदलाव आये। कृषि और इससे जुड़े पशुपालन में मोटर यान्त्रिकरण ने प्रवेश किया। **1930** के दशक से शुरू होकर यह प्रक्रिया **20**वीं सदी के अंतिम दशकों तक जारी रही। जानवरों की शक्ति का इस्तेमाल **20**वीं सदी के मध्य के बाद समाप्ति की ओर बढ़ गया।

मोटर यान्त्रिकरण के विभिन्न चरणों में उत्पादकता और कुल पैदावार में लगातार वृद्वि होती गयी। कृषि उपजों के दामों लगातार गिरावट के रुख ने छोटी जोतों को बर्बाद कर दिया। दूसरी ओर मोटर यान्त्रिकरण ने कृषि में स्थिर पूंजी के अनुपात को बहुत ऊंचाई पर पहुंचा दिया। जो भी क्षेत्र/जोतें इससे बाहर थी वे प्रतियोगिता से बाहर धकेल दी गयीं। औद्योगिक देशों में (साम्राज्यवादी देशों) वर्तमान समय में कृषि कर्म में लगी आबादी का महज **1** से **5** प्रतिशत होना इसी का परिणाम है।

इसी के साथ कृषि में बड़े पैमाने पर उर्वरकों के इस्तेमाल ने जिसे उद्योगों ने पैदा करना आरम्भ किया (रासायनिक उर्वरक) ने भी उत्पादकता और कुल उत्पादन में बढ़ोत्तरी को जन्म दिया। इसी के साथ अधिक पैदावार के लिए संकर बीजों का इस्तेमाल, अलग–अलग क्षेत्रों में फसलों का चुनाव, किया गया।

मोटर यान्त्रिकरण, उर्वरकों के व्यापक इस्तेमाल, बीजों/पौधों के चयन ने साम्राज्यवादी देशों की कृषि में प्रति कर्मकर उत्पादकता को **2500** से **2000** कुन्तल (**50** से **200** हेक्टेयर प्रति कर्मकर **X 50** से **100** कुन्तल) तक पहुंचा दिया।

सारणी–1

साम्राज्यवादी देशों में खेती योग्य भूमि,कृशि कर्म में लगी आबादी में प्रति व्यक्ति खेती योग्य भूमि, प्रति हेक्टेयर उत्पादकता, प्रति व्यक्ति उत्पादन (अनाजों का)

देश	खेती योग्य भूमि (हजार हेक्टेयर)(2003–05)	कृषि कर्म में लगी आबादी में प्रति व्यक्ति खेती योग्य भूमि (2003–05)	कृषि मं सक्रिय प्रतिशत आबादी	प्रति हेक्टेयर उत्पादकता (अनाज) (2003–05)	प्रति हेक्टेयर उर्वरकों का इस्तेमाल (कि.ग्रा.) (2003–05)	प्रति हेक्टेयर कीटनाशकों का उपयोग (100 ग्रा./हे) (2000–02)	प्रति व्यक्ति उत्पादन (कि.ग्रा.)
आस्ट्रेलिया	48,799	57.2	4.1	1,946	47	-	1,925
आस्ट्रिया	1,454	4.1	5.4	5,978	220	21.1	590
बेल्जियम	863	5.2	1.8	8,788	-	-	265
फ्रांस	19,597	11.8	4.2	6,893	204	45.5	1,045
कनाडा	52	72.9	2.7	3,018	51	-	1,626
जर्मनी	12	7.0	2.4	6,614	217	21.3	551
नीदरलैंड	940	1.9	2.9	8,308	564	85.2	111
न्यूजीलैंड	34	10.2	8.2	7,360	300	9.8	218
स्वीडन	2,681	9.6	2.1	4,803	105	6.1	588
यू.के.	5,784	5.9	1.3	7,085	299	50.7	360
अमेरिका(यू.एस.ए.)	177,851	30.6	1.9	6,443	114	-	1,253
जापान	275	0.5	4.6	5,849	498	17.0	92.00

स्त्रोत : World Development Report,-World Bank- 2008

उपरोक्त सारणी **20**वीं सदी में कृषि में आये बदलावों को अच्छी तरह से प्रदर्शित करती है। आगे तीसरी दुनिया के देशों में इसकी तुलना करने पर हम देखेंगे कि तीसरी दुनिया के देश इसकी तुलना में कहां खड़े हैं।

3.उपनिवेशों व बाद में स्वाधीन तीसरी दुनिया के देशों में कृषि का विकास व समस्याऐं

अगर **16**वीं सदी को देखा जाय तो पूरी दुनिया में अलग–अलग किस्म की कृषि प्रणालियां दिखायी देती हैं। साथ ही अलग–अलग कृषि प्रणालियों में उत्पादकता का अन्तर मौजूद होते हुए भी कम है। साथ ही तमाम कृषि प्रणालियों में ''ास दिखायी नहीं देता है। यह क्रमशः भले ही लम्बे समय में खुद को विकसित करती।

16वीं से **19**वीं शताब्दियों का इतिहास यूरोप के तमाम देशों (इंग्लैण्ड, फ्रांस, हॉलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल ...) के उदीयमान बुर्जुआ के द्वारा अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका की लूटपाट का इतिहास रहा है। यूरोपीय अप्रवासियों ने आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड की मूल आबादी को तो लगभग समाप्त ही कर दिया। इंका, माया, एजटेक सभ्यताओं को नष्ट कर दिया। अफ्रीका की आबादी के ठीक–ठाक हिस्से को गुलाम बनाकर खानों, बागवानी और खेती में डाल दिया।

उपनिवेशों से कच्चा माल, सोना–चांदी, मानव श्रम (गुलामों के रूप में) की लूट ने ही यूरोप में औद्योगिक क्रांति के लिए पूंजी उपलब्ध करायी साथ ही यूरोप के उद्योगों के लिए बाजार उपलब्ध कराया।

तीसरी दुनिया के देशों में औपनिवेशिक काल में कृषि ठहराव का शिकार रही। साम्राज्यवादियों का इन समाजों से सामाजिक अवलम्ब सामंती वर्ग था, जिसकी इसमें कोई रुचि नहीं थी। साम्राज्यवादियों ने अपनी जरूरत के अनुरूप अलग–अलग देशों में निर्यात के लिए कपास, नील, गन्ना, चाय, कहवा, रबड़ की खेती करवायी। लेकिन यह सीधे उनके अपने नियंत्रण में था। गुलाम व बंधुआ मजदूरों के जरिये यह कृषि कर्म कराया गया। उपनिवेशों में खेती से पैदा होने वाले अतिरिक्त मूल्य को साम्राज्यवादियों ने हड़प लिया।

उन देशों में जहां अप्रवासी यूरोपीय आबादी बसी थी वहां स्थिति थोड़ी भिन्न हुयी।

आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, कनाडा, संयुक्त राज्य अमेरिका में यूरोपीय अप्रवासियों की संख्या कहीं ज्यादा थी। सभी संसाधनों पर इनका नियंत्रण कायम था। इंग्लैण्ड से स्वाधीनता हासिल करने के बाद यह पश्चिम यूरोप के समान ही औद्योगिक राष्ट्रों (साम्राज्यवादी) में शामिल हो गये।

ब्राजील, अर्जेन्टीना में अधिकांश खेती योग्य भूमि पर यूरोपीय अप्रवासियों का ही कब्जा था। यहां एक तरफ बड़े–बड़े फार्म तो दूसरी ओर ढेर सारे छोटी जोत के फार्म मौजूद थे। इन देशों में बड़े फार्मों पर आधुनिक तरीके से खेती की गयी। इनमें भारी आबादी कृषि कर्म से विस्थापित होती गयी। लेकिन इन देशों में औद्योगिक विकास यूरोप के देशों से बहुत पीछे था, इसलिए इन देशों में आय में भारी असमानता, ऊंची बेरोजगारी दर दिखायी देती है।

तीसरी दुनिया के अधिकांश देशों में स्वतंत्रता हासिल होने के बाद बुर्जुआ वर्ग सत्ता में आया। साम्राज्यवाद की मजबूत पकड़ इन देशों पर जारी थी। इन देशों में जमीनों के पुनर्वितरण का साहस पूंजीपति वर्ग में नहीं था। जमीनों के पुनर्वितरण से जो कृषि का विकास होता और उद्योगों के लिए मांग पैदा होती, वह इन देशों में नहीं हुआ।

इन देशों में पूंजीपति वर्ग के सत्तासीन होने के बाद, कृषि में पूंजीवादी विकास को प्रोत्साहन दिया गया। जमींदारी प्रथा को समाप्त किया गया। इसके तहत सामंती लगानों, बंधुआ मजदूरी को समाप्त किया गया। सीमित अर्थों में ही पर कृषि के विकास के लिए सिंचाई के साधनों, उपजों के लिए समर्थन मूल्य, की व्यवस्था राज्य द्वारा की गयी। कृषि के आगतों पर सब्सिडी दी गयी। आगतों की व्यवस्था के लिए सहकारी समितियों का निर्माण किया। कुछ ही दशकों में इन देशों की कृषि बाजार का हिस्सा बन गयी। कृषि में पूंजीवादी सम्बन्धों के कायम होने के साथ ही किसान आबादी में विभेदीकरण में तेजी आयी। कम उत्पादक जोतों के किसान निचली श्रेणियों में गिरते गये। एक बड़ी आबादी कृषि से तबाह होकर, उद्योगों में मजदूरों के रूप में शामिल हुयी। इसी के साथ एक बड़ी आबादी कृषि मजदूरों में शामिल हुयी। इसके बाद भी एक बहुत बड़ी आबादी उद्योगों में रोजगार के अवसरों के न होने की वजह से, बेहद कंगालीकरण के बावजूद कृषि कर्म में लगी हुयी है।

तीसरी दुनिया के जिन देशों में मजदूर वर्ग के नेतृत्व में क्रांतियां सम्पन्न हुयीं (क्यूबा, चीन, उ.कोरिया, वियतनाम ...) वहां स्थिति भिन्न थी। इन देशों में व्यापक भूमि सुधार, कृषि के विकास के लिए राज्य के नियंत्रण में सिंचाई के साधनों, बीजों, रसायनों की व्यवस्था हुयी। सहकारी फार्मों, सामूहिक फार्मों के तहत किसानों को संगठित किया गया। इन देशों में अनाजों की बढ़ती पैदावार ने इन्हें आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया।

1960 के दशक में रॉकफेलर, फोर्ड जैसी साम्राज्यवादियों की शोध संस्थाओं के नेतृत्व में तीसरी दुनिया खासकर लैटिन अमेरिका, एशिया के देशों में हरित क्रांति का निर्यात किया गया। हरित क्रांति के तहत कृषि में उन्नत बीजों, आधुनिक तकनीक के तहत कृषि कर्म को बढ़ावा दिया गया। इसके लिए यह भी आवश्यक था कि सिंचाई के साधनों का व्यापक विकास हो, उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया जाय। यह दशाएं अलग–अलग देशों के स्तर पर बहुत कम क्षेत्रों में उपलब्ध थी। इसके परिणाम स्वरूप वहुत बड़ा भू–भाग हरित क्रांति से वंचित रहा। इसके बावजूद हरित क्रांति ने कृषि में उत्पादन को पूर्व की तुलना में खासा बढ़ाया। इसके परिणाम के तौर पर तीसरी दुनिया के कई देश, खाद्यान्न उत्पादन में आत्म निर्भरता की ओर अग्रसर हुए। लेकिन यहां पर रेखांकित कर देना चाहिए कि यह आत्मनिर्भरता बहुत बड़ी सर्वहारा–अर्धसर्वहारा आबादी की भुखमरी पर आधारित थी। अगर इस आबादी को भरपेट भोजन उपलब्ध कराया जाता तो यह आत्मनिर्भरता समाप्त हो जाती।

तीसरी दुनिया के देशों द्वारा अनाजों के वितरण के लिए जन वितरण व्यवस्था (Public distribution system) का गठन किया। इन देशों में बड़ी आबादी भयानक गरीबी में जिन्दगी बसर कर रही थी। जन वितरण व्यवस्था के तहत सीमित हद तक खाद्यान्न कम मूल्यों पर इस गरीब आबादी (सर्वहारा, अर्ध सर्वहारा) को उपलब्ध कराये जाते थे। इस प्रणाली के चलते सर्वहारा/अर्ध सर्वहारा आबादी को सीमित खाद्य सुरक्षा हासिल हुयी।

इसी के साथ एक दूसरी गति भी इन देशों में कृषि को प्रभावित करती रही है। ये देश खाद्यान्नों के लिए साम्राज्यवादी देशों पर निर्भर बने रहे हैं। साम्राज्यवादी देशों के सस्ते खाद्यान्नों ने इन देशों में खाद्यान्नों के दामों में गिरावट को जन्म दिया। इसी के साथ हरित क्रांति ने जहां उत्पादन को बढ़ाया, वहीं इसके दामों में गिरावट को भी जन्म दिया। इसके परिणाम स्वरूप कृषि में विभेदीकरण ने भारी किसान आबादी को कंगाली में भी धकेला।

इसी के एक परिणाम के तौर पर इन देशों में साम्राज्यवादी देशों में निर्यात के लिए सीमित स्तर पर नकदी फसलों को उपजाने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया गया क्योंकि खाद्यान्नों की तुलना में इनके अधिक दाम बाजार में उपलब्ध थे।

4. वैश्वीकरण के दौर में तीसरी दुनिया की कृषि

द्वितीय विश्व युद्व के बाद से लेकर **70** के दशक की शुरुआत तक का समय साम्राज्यवादी पूंजी के लिए स्वर्ण युग का समय था। द्वितीय विश्व युद्व में यूरोप और जापान क्षतिग्रस्त हो गये थे। साम्राज्यवादी पूंजी ने इन देशों के पुनर्निर्माण में खासा मुनाफा कमाया। **70** के दशक की शुरुआत होते–होते यह पुर्ननिर्माण पूरा हो गया। अब फिर साम्राज्यवादी पूंजी के सामने पूंजी संचय की समस्या खड़ी हो गयी। **80** के दशक में वैश्वीकरण इस संचय की समस्या को तीसरी दुनिया के माध्यम से हल करने का मन्त्र था।

तीसरी दुनिया की तुलनात्मक रूप से बहुत कम विकसित कृषि को, साम्राज्यवादियों की अति उत्पादक कृषि से टकराना था।

तीसरी दुनिया के अधिकांश देश अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक जो कि साम्राज्यवादियों की संस्थाएं हैं, के कर्जदार थे। भुगतान संकट की स्थिति में इन देशों के सामने साम्राज्यवादियों ने तमाम शर्तें रखी। इसके एक परिणाम के रूप में कृषि से तमाम सरकारों ने पल्ला झाड़ना शुरू कर दिया। खाद्यान्न आत्म निर्भरता की ओर बढ़ते देश, उल्टी दिशा में जाने लगे।

साम्राज्यवादी संस्थाओं (अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक) ने इन देशों की सरकारों के लिए ढांचागत समायोजन नीतियां प्रस्तावित कीं। साथ ही इनको लागू करने के लिए इन पर दबाव बनाया। इन नीतियों के तहत कृषि में सब्सिडी को खत्म करने, अपने बाजारों को साम्राज्यवादी कृषि उत्पादों के लिए खोलने, कृषि उत्पादों पर सीमा कर कम करने के लिए दबाव बनाया। इसने इन देशों की कृषि के सामने संकट खड़ा कर दिया।

मैक्सिको, **1980** के दशक में मक्का का निर्यातक देश था। **80** के दशक में कर्ज संकट के समय अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक ने भुगतान संकट के समय मैक्सिको के सामने सीमा कर घटाने, राज्य के दखल और प्रोत्साहन को कम करने की शर्तें रखी। **1982** में प्रति वर्ष चुकाया जाने वाले ब्याज की किस्त, सरकार के कुल खर्च के **19** प्रतिशत से बढ़कर **1988** में **57** प्रतिशत हो गयी। इसका कृषि में कुल परिणाम सब्सिडी घटने, समर्थन मूल्य की व्यवस्था चरमराने में हुआ। **1994** में नाफ्रटा के अस्तित्व में आने के बाद, सस्ती अमेरिकी मक्का ने (जिसे भारी सब्सिडी हासिल थी) मक्का के दामों को आधा गिरा दिया। मैक्सिको एक मक्का आयातक देश में रूपान्तरित हो गया।

मक्का की खरीद बिक्री के लिए मैक्सिको सरकार द्वारा खड़ी की गयी संस्था के ध्वस्त होते ही, सीमा के दोनों ओर कारगिल और मैसिका (सं.रा. अमेरिका) का नियंत्रण हो गया। लाखों मक्का उपजाने वाले किसान तबाह हो गये।

फिलीपीन्स एक चावल निर्यातक देश से आयातक देश में रूपान्तरित हो चुका है। यहां भी ढांचागत समायोजन नीतियों (IMF, WB) ने अपनी भूमिका निभायी है।

[स्रोत: By Waidan Billo,16.05.08,nttp:/k/kwww.Commondream.org/karchive/k2008/k05/k16/k9004/k;accessed on 21.05.08] (Update,series16, Page58)

इन्डोनेशिया में **1992** से पहले, घरेलू सोयाबीन से आवश्यक मांग पूरी हो जाती थी। अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक के दबाव में राज्य के खरीद बिक्री संस्थान, अतिरिक्त भंडारण को नियमित करने वाली कम्पनी बुलोग को क्रमशः समाप्त कर दिया गया और निजी हाथों में सौंप दिया गया। **2008** में इन्डोनेशिया में कुल सोयाबीन (सस्ती) खपत का **60** प्रतिशत अमेरिका से आयात होता है। (Update, series16, Page -59)

1906 में हैती घरेलू चावल की मांग का उत्पादन करने में सक्षम था। अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक के दबाव में सीमा कर घटाये गये और सं.रा. अमेरिका के सब्सिडी हासिल सस्ते चावल ने हैती के किसानों को बर्बाद करना शुरू कर दिया। हैती एक चावल आयातक देश में रूपान्तरित हो गया।

इसका परिणाम ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ती कंगाली में वैश्विक स्तर पर देखा जा सकता है। दुनिया भर में लगभग **90** करोड़, यानी प्रत्येक सातवां व्यक्ति भुखमरी का शिकार है। इसी के साथ ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर बेरोजगारी को पैदा किया है।

खाद्यान्न उत्पादन से हतोत्साहित होकर और अंतर्राष्ट्रीय बाजार में नकदी फसलों के ऊंचे दामें ने गरीब देशों के किसानों को नकदी फसलों को पैदा करने के लिए प्रेरित किया। इन फसलों की पैदावार के खासी अधिक लागत की आवश्यकता ने किसानों में बड़ी ट्टणग्रस्तता को जन्म दिया है। बड़े फार्मर, धनी किसान इस स्थिति में हैं कि वे अधिक लागत लगाकर इन फसलों को पैदा करें। यह इस स्थिति में भी होते हैं कि बाजार के उतार–चढ़ावों को देख सकें और एकाधबार घाटा भी उठा सकें। लेकिन मझोले–छोटे किसान इस स्थिति में नहीं होते हैं। भारत में किसानों की भारी संख्या में आत्महत्या के पीछे नकदी फसलों को पैदा करने में हुआ घाटा बड़ी वजह है।

इस दौर में तीसरी दुनिया के देशों में पूर्व में खड़ी की गयी जन वितरण व्यवस्था को ध्वस्त कर दिया गया। साम्राज्यवादियों ने इन सरकारों द्वारा अनाज की खरीद के लिए गठित संस्थाओं को ध्वस्त करने, समर्थन मूल्य प्रणाली को समाप्त करने का दबाव बनाया इसके एक परिणाम के तौर पर छोटे–मझोले अनाज उत्पादक किसानों की आय में गिरावट हुई। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि साम्राज्यवादी देशों से आयातित अनाज कहीं सस्ता था। इसके दूसरे परिणाम के तौर पर इन देशों में सर्वहारा, अर्ध सर्वहारा आबादी को हासिल सीमित खाद्य सुरक्षा समाप्त होने लगी। इसके परिणाम के तौर पर इनकी भारी आबादी खाद्यान्न संकट का शिकार होने लगी।

वैश्वीकरण के दौर में तीसरी दुनिया के देशों में ठेका कृषि को खासा बढ़ावा मिला है। एकाधिकारी कम्पनियों ने किसानों से निश्चित प्रकार की फसलों (सब्जी, फल, नगदी फसलों) को पैदा करने के लिए समझौते किये हैं। इसमें किसानों को बीज, कीटनाशक इन कम्पनियों से खरीदने होते हैं। ये कम्पनियां इन उत्पादों को खरीदकर मंहगे दामों पर बेचती हैं।

साम्राज्यवादियों ने खाद्य सहायता के नाम पर भी तमाम देशों में अपने अतिरिक्त अनाज को पटकने की राजनीति की है। इसके पीछे कुल इच्छा उन देशों की कृषि को बर्बाद करने अपने सस्ते उत्पादों को बेचने और उन देशों को अपनी जकड़ में लेने की नीति होती है। अप्रफीकी देशों (उप सहारा के देशों) में साम्राज्यवादी यही खेल खेलते रहे हैं।

तलिका–2

विश्व खाद्यन्नों (मोटा अनाज,गेहूँ,चावल) का संतुलन
(दस लाख मी.टन)

समग्रता मे आयातक (94–96)	**1964-66**	**1974-74**	**1984-86**	**1989-91**	**1994-96**
पूर्वी व दक्षिण पूर्वी एशिया	-15.4	-29.4	-38.4	-53.2	-84.5
दक्षिण एशिया	-10.4	-10.2	-3.1	-3.1	-64.2
समपूर्ण एशिया	-26.8	-39.6	-41.5	-56.4	-64.2
उत्तरी अफ्रीका	-5.4	-5.2	-40.9	-41.7	-41.7
लैटिन अमेरीका,कैरिबियाई देश (अर्जेन्टीना को छोड़कर)	-4.7	-11.4	-19.8	-20.4	-30.5
उप सहारा अफ्रीका	-1.6	-0.4	-9.9	-6.5	-9.4
सभी आयातकों का जमा	-37	-67	-112	-125	-146
1 पचिमी यूरोप	-27.5	-25.4	10.7	24.7	16.3
1 उत्तरी अमेरिका	59.7	87.2	103.6	115.6	108.8
3 आसानिया	7.2	9.8	20.4	14.2	15.6
4 अर्जेंटीना	10.0	9.8	17.1	9.6	11.9
निर्यातकों का योग	49.4	81.4	151.9	164.2	152.5
भूतपूर्व सोवियत संघ व पूर्वी यूरोप	-9.3	-15.8	-38	-36.8	-4.4
सम्पूर्ण विश्व	2.6	0.9	1.8	2.4	2.3
विकासशील देश	-17.0	-38.5	-65.9	-88.1	-103.8

स्त्रोत : FAO STAT

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि विकासशील देशों में खाद्यान्न उत्पादन, उनकी आबादी के लिए पर्याप्त नहीं है और इसके लिए वे साम्राज्यवादी देशों पर निर्भर हैं।

सारणी–3

विश्व में खाद्यन्न उत्पादन व जनसंख्या

	उत्पादन (दस लाख टन)	विकास दर % प्रतिवर्ष		जनसंख्या (दस लाख)		विकास दर (प्रतिशत)	
	औसत (1994–96)	1961–96	1986–96	1960	1995	60–95	95–2000
समग्रता में आयातक (1994–96)							
1 पूर्वी व दक्षिण–पूर्व एशिया	486	3.4	2.3	1019	1911	1.81	1.05
2 दक्षिण एशिया	707	3.2	2.4	1583	3136	1.97	1.33
3 निकट पूर्व व उत्तरी अफ्रीका	86	2.5	2.6	142	367	2.75	2.44
4 लैटिन अमेरिका व कैरिबियाई देश (अर्जेन्टीना को छोड़कर)	90	3.1	1.8	197	442	2.34	1.57
5 उप सहारी अफ्रीका	82	2.3	2.3	228	551	2.76	2.78
आयातकों का योग	965	3.1	2.4	2150	4536	2.16	1.64
समग्रता में निर्यातक (1994–96)							
1 पश्चिमी यूरोप	190	2	0.3	325	384	0.47	0.21
2 उत्तरी अमेरिका	373	1.9	1.6	204	297	1.07	0.80
3 ओसीनिया	27	2.6	2.3	13	21	1.52	1.07
4 अर्जेन्टीना	26	1.4	2.0	21	35	1.50	1.27
निर्यातकों का योग	626	2.0	1.2	563	736	0.77	0.52
भूतपूर्व सोवियत संघ व पूर्वी यूरोप	212	1.0	-3.3	314	415	0.80	0.04
सम्पूर्ण विश्व	1793	2.3	1.1	3027	5687	1.82	1.38

स्त्रोत : FAO STATE

सारणी–4

सम्पूर्ण वैश्विक अनाज (मोटा अनाज व गेहूँ) व तैलीय बीज (सोयाबीन,अल्सी,सूरजमुखी)

विकास दरो का चक्रवृद्धि रुझान

	1970-90	90-07	2009-17 (अनुमान)
उत्पादन	2.2	1.3	1.2
उत्पादकता	2.0	1.1	0.8
क्षेत्र	0.15	0.15	0.39
जनसंख्या	1.7	1.4	1.1
प्रति व्यक्ति उत्पादन	0.56	0.11	0.02

स्त्रोत : USDA Agricultural Projections to 2017

सारणी **3** से पता चलता है कि दुनिया के पैमाने पर खाद्यान्न उत्पादन की वृद्धि दर में 1986–96 के दौरान गिरावट का रुख है। **1961–96** के दौरान उत्पादन वृद्धि दर **2.3%** है। जबकि उसी काल के अन्तिम दस वर्षों में यह घटकर **1ण1** प्रतिशत रह गयी। इसी तालिका से ज्ञात होता है कि **1960–95** के दौरान जनसंख्या वृद्धि **1.82%** रही है। इससे पता चलता है कि इस दौरान उत्पादन वृद्धि दर जनसंख्या वृद्धि दर से अधिक है।

सारणी **4** के अनुसार **90–07** के बीच उत्पादन वृद्धि दर **1.3%** है, जनसंख्या वृद्धि दर 1.4% है। इससे पता चलता है कि उत्पादन वृद्धि दर, जनसंख्या वृद्धि दर की तुलना में कम रही है।

खाद्यान्न उत्पादन में गिरावट का रुख वैश्विक स्तर पर वैश्वीकरण की नीतियों का प्रतिबिम्बन है।

सारणी–5

a. कृषि के विकास में सरकारी खर्च

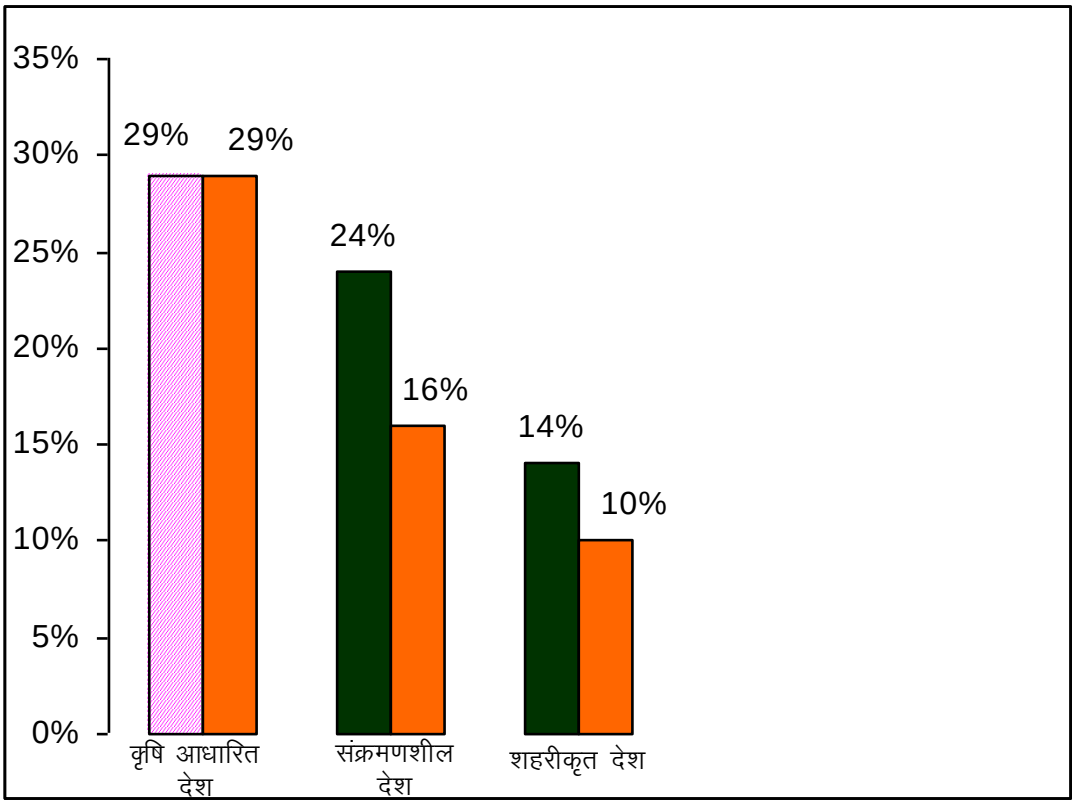

सारणी **5** से पता चलता है कि ऐसे देश जिनकी सकल घरेलू उत्पाद में खेती का हिस्सा ज्यादा है उन देशों में (कृषि आधारित) कृषि के विकास पर सरकारी खर्च खासा कम है। यह कुल सकल घरेलू उत्पाद **(G.D.P.)** का लगभग **1** प्रतिशत होता है।

इसकी तुलना में संक्रमणकालीन देशों व औद्योगिक देशों में क्रमशः 11% व 12% (सन् **2000**) है। यह भी वैश्वीकरण के दौर में ढांचागत समायोजन नीतियों का प्रतिबिम्बन है जिसके तहत कृषि सब्सिडी, सिंचाई व्यवस्था में अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व बैंक द्वारा कमी करने का दबाव इन देशों में बनाया गया है।

b. कृषि के विकास पर सरकारी खर्च/कृषि सकल घरेलू उत्पाद

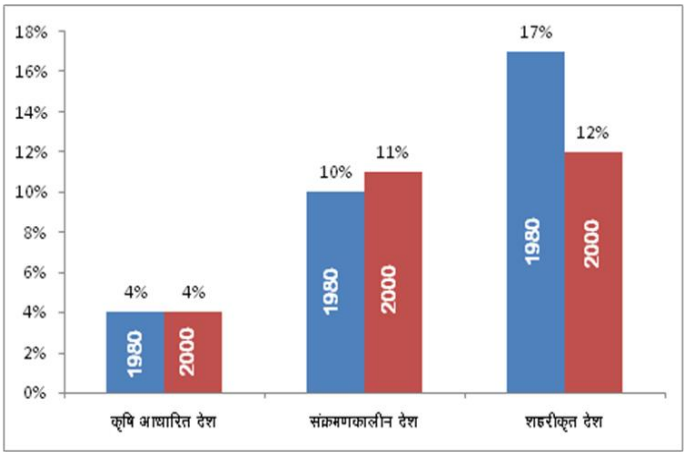

सारणी–6							
तीसरी दुनिया के कुछ देशों में कृषि योग्य भूमि, कृषि कर्म में लगी आबादी, प्रति व्यक्ति खेति योग्य भूमि, प्रति हैक्टेयर उत्पादकता, प्रति व्यक्ति उत्पादन (अनाज)							
देश	खेती योग्य भूमि (1000 हेक्टेयर) (2003–05)	कृषि कर्म में लगी आबादी पर प्रति व्यक्ति भूमि (2003–05)	कृषि में सक्रिय आबादी का प्रतिशत (2002–2004)	प्रति हेक्टेयर उत्पादकता (कि.ग्र.)	प्रति हेक्टेयर उर्वरकों का प्रयोग (कि.ग्रा.)	प्रति हेक्टेयर कीटनाशकों का प्रयोग (कि.ग्रा.)	प्रति व्यक्ति उत्पादन (कि.ग्रां)
भारत	169,383	0.3	37.5	2,417	107	-	219
बांग्ला देश	8,417	0.1	51.7	3,535	198	3.7	285
चीन	115,632	1.0	47.7	5,095	395	-	313
इंडोनेशिया	36,500	0.4	43.5	4,728	91	-	298
इथियोपिया	11,769	0.2	40.4	1,213	3	0.6	157
रवान्डा	1,470	0.2	53.9	1,029	-	0.9	39
मिश्र	3,469	0.1	28.7	7,545	572	-	296
हैती	1,100	0.2	34.3	824	-	-	45
ब्राजील	66,600	2.5	20.8	3,133	136	10.5	339
मैसिको	27,300	1.2	12.6	3,009	67	-	299
चिली	2,307	1.0	18.5	5,621	249	-	240
फिलीपीन्स	10,700	0.4	24.5	2,916	84	-	236
L=ksr % % World Development Report-2008 W.B.							

5. जैविक ईंधन का निर्माण और उपभोग के लिए घटते खाद्यन्न

विगत वर्षों में खाद्यान्नों, गन्ने, तैलीय बीजों से एथेनाल और बायोडीजल निर्माण में तेजी आयी है। **2006–07** में अमेरिका ने अपने मक्के की उपज के **15%** का इस्तेमाल एथेनाल बनाने में किया है। वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल के दामों में बढ़ोत्तरी और ईंधन सुरक्षा के तहत साम्राज्यवादी और तीसरी दुनिया के बड़े देशों (भारत, चीन, ब्राजील, अर्जेंटीना) ने जैविक ईंधन का निर्माण बढाया है। एक तरफ करोड़ों की संख्या में लोग भुखमरी का शिकार हैं और दूसरी ओर अमीर लोगों को सस्ता जैविक ईंधन हासिल हो, जिससे वे अपनी कारें चला सकें, इसके लिए साम्राज्यवादी जैविक ईंधन को बढावा दे रहे हैं।

देश	जैविक ईधन		प्रयुक्त कृषि उत्पाद		जैविक ईधन क उत्पादकता एकड		कृषि भूमि का दोहन 10 लाख			उपजाऊ कृषि भूमि प्रतिशत	
	एथेनाल	वायो डीजल	एथेनाल	वायो डीजल	एथेनाल	वायो डीजल	एथेनाल	वायो डीजल	देश का कुल	क्षेत्रफल	जैविक ईधन क प्रतिश
	10 लाख				गैलन / एकड़		10 लाख				
अर्जेन्टीना		117		सोयाबीन (100%)		65	-	1.8	1.8	70	2.5
ब्राजी	5,284	105	गन्न (100%)	सोयाबी (66%)	710	65	7.4	1.1	8.5	146	5.8
कनाडा	159	27	मक्का (70 %)		370	-	0.3	-	0.7	113	0.6
			गेहूं (30%)		115	-	0.4	-			
चोन	469	30	मक्का (70%)		215		1.6		2.4	354	0.7
			गेहूं (30%)		185		0.8				
EU-27	488	1,480	गेहूं (48%)	अंगू (64%)	182	140	1.3	6.8	12.3	281	4.4
			चुकन्द (29%)	सोयाबीन (16%)	550	60	0.3	3.9			
सं. रा. अमेरिका	6,485	509	मक्का (9 %)	सोयाबीन (74%)	403	66	15.7	5.7	22.1	431	5.1
			ज्वार (%)		146	-	0.7	-			
कुल	12,884	2,267					28.5	19.3	47.8	1,395	3.4

जैसा कि उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि **2006–07** में अंकित देशों ने जैविक ईंधन बनाने के लिए **47.8** मिलियन एकड़ उपजाऊ भूमि का इस्तेमाल किया है। यह आस्ट्रेलिया के खेतीयोग्य भूमि का **35%** के लगभग हिस्सा है। अमेरिका की कृषि योग्य भूमि का यह लगभग **13%** हिस्सा है। अमेरिका की कुल उपज का **13** प्रतिशत लगभग **40** मिलियन टन अनाज होता है। यह वैश्विक स्तर पर प्रति व्यक्ति **6** किलो उत्पादन बनता है। लेकिन **2007–08** व **2008–09** के आंकड़े चौंकाने वाले हैं।

तालिका–8

संयुक्त राज्य अमेरिका में एथेनाल उत्पादन में मक्का का प्रयोग
(दस लाख टन)

		2002-03	2007-08	2008-09
1	एथेनाल उत्पादन में मक्का का प्रयोग	27.1	81.6	108.9 #
2	अमेरिका में मक्का उत्पादन का %	11.9	24.6	32.8
3	विश्व में मक्का उत्पादन का %	4.5	11.6	15.4

Planned estimate reported by USDA स्त्रोत : EPW, June 28, 2008,Page 117

इसके परिणाम स्वरूप वैश्विक स्तर पर मक्का के दामों में भारी उछाल पैदा हुआ जिसने बाकी अनाजों के दामों में उछाल पैदा किया।

इसके बाद भारत सरकार ने **350** लाख एकड़, ब्राजील ने **3000** मिलियन एकड़ भूमि को जैविक ईंधन के हवाले करने की बात की। दक्षिण अप्रफीका, इण्डोनेशिया ने बड़ी भूमि को इसके हवाले करने इरादे जाहिर किये।

अगर अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमतें **40** से **60** डॉलर / बैरल को पार करती हैं तो जैविक ईंधन का निर्माण मुनाफे का सौदा हो जाता है। साम्राज्यवादी इसके आगे नहीं सोच सकते हैं। चूंकि खुद इनके यहां खाद्य संकट मौजूद नहीं है, इस कारण भी यह निश्चिंत होकर ऐसा कर पा रहे हैं। लेकिन पूरी दुनिया की मानवता को यह खाद्यान्न संकट में धकेल रहे हैं।

यहीं यह जानना चाहिए कि इस पूरे खेल के पीछे दैत्याकार बहुराष्ट्रीय कंपनियां सक्रिय हैं जिनका विश्व के कृषि उत्पादों पर खासा नियंत्रण है। इनकी चर्चा अलग से करेंगें।

6. विकसित देशों में उपभोग में परिवर्तन और दुनिया के स्तर पर बढ़ता अंतर

तालिका–9				
2004–06 के दौरान भारत, चीन व अमेरिका में चुनिन्दा खाद्यय पदार्थो का उपभोग				
	भारत	चीन	अमेरिका	विश्व
सभी अनाज (Kg)	175.1	287.9	953	316.0
मांस	5.3	56.8	126.6	40.2
अण्डे	1.8	21.6	15.2	9.7
स्त्रोत : FAO STAT Link To OECD-http/stats.oecd.irg/wbos/viewhtml.aspx EPW,Page 118,June 28,2008				

वैश्विक खाद्य संकट के मद्देनजर अमेरिका ने तत्कालीन राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने भारत, चीन की आबादी को जिम्मेदार बताया था। लेकिन उपरोक्त आंकड़े काफी कुछ बता देते हैं। जहां **2004–06** में अमेरिका में प्रति व्यक्ति अनाज का उपभोग **953.0** कि.ग्रा प्रति वर्ष है वहीं भारत और चीन के लिए यह क्रमशः महज **175.1** व **287.9** कि.ग्रा प्रति वर्ष है।

अमेरिका के कृषि विभाग **2007** के आंकड़ों के अनुसार **2007** में अमेरिका में प्रति व्यक्ति उपभोग **1046** प्रति कि.ग्रा/प्रति वर्ष हो गया। अमेरिका में गाय के मांस का उपभोग **42.6** कि.ग्रा प्रति व्यक्ति/ प्रति वर्ष है जबकि भारत और चीन में यह क्रमशः **1.6** कि.ग्रा, **5.6** कि.ग्रा है। मुर्गे के मांस का अमेरिका व भारत में क्रमशः उपभोग **45.4** कि.ग्रा व **1.9** कि.ग्रा प्रति वर्ष है। सूअर के मांस का प्रति व्यक्ति/प्रति वर्ष अमेरिका, भारत व चीन में क्रमशः **29.7,** नगण्य, **35** कि.ग्रा है। यूरोपीय यूनियन में यह प्रति व्यक्ति **42.6** कि.ग्रा/ वर्ष है।

यहीं हमें यह गौर करना चाहिए कि **1** किलो मुर्गे, सूअर व भैंस के मांस को हासिल करने के लिए क्रमशः **2.6, 6.5** एवं **7.0** किलो मक्का का इस्तेमाल अमेरिका में किया जाता है। दूध से बने उत्पादों का भी यूरोप, अमेरिका में कहीं अधिक उपभोग होता है।

लेकिन अफ्रीका महाद्वीप में यह औसत और भी नीचे है। वहां प्रति व्यक्ति अनाज उपभोग **162** किग्रा/प्रति वर्ष है।

उप सहारा अफ्रीका में हालत और भी ज्यादा बुरे हैं। यहां प्रति व्यक्ति/प्रति वर्ष अनाज का उपभोग **1980** में **158** किग्रा था। **1990** के दशक के मध्य में यह घटकर **136** किग्रा रह गया।

उपरोक्त सभी आंकड़े औसत आंकड़े हैं। इनसे अलग–अलग देशों/क्षेत्रों की असमानता का पता चलता है। लेकिन किसी देश विशेष के अन्दर शहरी/देहाती, विभिन्न वर्गों, लिंग के आधार पर क्या स्थिति है, नहीं पता चलता है।

जैसा कि तमाम आंकड़े बताते हैं कि वैश्विक स्तर पर **85.4** करोड़ के लगभग आबादी भुखमरी का शिकार है। अलग–अलग देशों में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली आबादी का उपभोग का स्तर औसत से कम ही होगा। ज्यादा गरीब देशों में स्थिति ज्यादा बदतर होगी। वैश्विक स्तर पर उत्पादन में जनसंख्या की तुलना में अगर कमी आती है और दूसरी ओर साम्राज्यवादी देशों, दूसरे देशों की अमीर आबादी में उपभोग बढ़ता है व अनाज को दूसरे क्षेत्रों में उपभोग किया जाता है तो इसका सीधा असर विशाल गरीब आबादी पर पड़ेगा। वैश्वीकरण की मुहिम ने दुनिया के पैमाने पर मेहनतकश आबादी को और खासकर गरीब देशों की आबादी को इस स्थिति में धकेला है जहां वह आवश्यक उपभोग के लिए भी अनाज खरीदने की स्थिति में नहीं रह गयी है।

7. वैश्विक स्तर पर कृषि उत्पादों, आगतों में एकाधिकारी कंपनियों का वर्चस्व

सारणी–10

कृषि आगतों के बड़े निर्यातक और बढ़ता संकेन्द्रण

	कृषि रसायन		बेज		जैव प्रोद्योगिकी	
कम्पनी	2004 में बिक्री (मिलियन डालर)	बाजार हिस्सा	2004 में बिक्री (मिलियन डालर)	बाजार हिस्सा	अमेरिका में इसकी पेटेंट संख्या	प्रतिशत हिस्सा
1 मोन्सेन्टो	3,180	10	3,118	12	605	14
2 डुपोन्ट./पायोनियर	2,249	7	2,624	10	562	13
3 सिजेन्टा	6,030	18	1,239	5	302	7
4 वेयर क्राप साइन्सेज	6,155	19	387	2	173	4
5 वी.ए.एस.एफ	4,165	13	-	-	-	-
6 डाउ एग्रो साइंसेज	3,368	10	-	-	130	3
7 लाइमाग्रेन	-	-	1,239	5	-1425	-
8 अन्य/निजि	7,519	23	16,593	66	-	34
9 सरकारी द्वात्र	-	-	-	-		-
बाजार सेकन्द्रण CR4(2004) CR4(1997)	60 47		33 23		38 -	
स्त्रोत : WDR 2008, World Bank						

उपरोक्त सारणी से पता चलता है कि पूरे विश्व के स्तर पर कुछ एकाधिकारी घरानों के नियंत्रण में वैश्विक स्तर पर कृषि को नियमित किया जा रहा है। सारणी में चार एकाधिकारी कंपनियों का कृषि रसायन (पादप नाशक, कीट नाशक) के क्षेत्र में हिस्सा **2004** में **60** प्रतिशत है (सबसे अधिक बाजार हिस्से वाली)। अगर सारी कंपनियों को ले लिया जाय तो उनका हिस्सा **77** प्रतिशत है। यानी महज **7** एकाधिकारी कंपनियां तय कर रही हैं कि कृषि रसायनों का क्या दाम होगा, कहां क्या बेचना है और कहां नहीं बेचना है यह सब कुछ उन्हें मिलने वाले मुनाफे से तय होगा। दूसरे इनके एकाधिकार में **1997** से **2004** तक ही **13** प्रतिशत की वृद्वि हुयी है। इससे पता चलता है कि बाजार में कृषि रसायनों के दामों में उलटफेर किसकी कारस्तानी है।

बीजों के बाजार में सबसे बड़ी चार कंपनियों का हिस्सा **1997** में **23** प्रतिशत था जो कि **2004** में बढ़कर **33** प्रतिशत हो गया। जैव प्रौद्योगिकी में अमेरिका के कुल पेटेन्ट का **38** प्रतिशत इनके कब्जे में है।

एक अन्य उदाहरण को देखें।

कॉफी का उत्पादन लगभग **2.5** करोड़ किसान/मजदूरों (कुल संख्या में दोनों शामिल हैं) द्वारा किया जाता है। इसमे अंतर्राष्ट्रीय बिक्री में जो चार सबसे बड़ी कंपनियां लगी हैं उनका प्रतिशत हिस्सा **40** है। कॉफी को प्रसंस्करण करने वाली कंपनियों में सबसे बड़ी चार का हिस्सा **45** प्रतिशत है। कॉफी के लगभग **50** करोड़ उपभोक्ता हैं। कॉफी पैदा करने वाले देशों में ब्राजील, कोलंबिया, इण्डोनेशिया व वियतनाम विश्व का **64** प्रतिशत उत्पादन करते हैं। **1990** से लेकर **2002** तक पुफटकर कॉफी के मूल्य में दो गुने की वृद्वि हुयी। लेकिन इन देशों का आमदनी का हिस्सा एक तिहाई से घटकर **10** प्रतिशत रह गया। चाय, कहवा में भी मिलती हुयी स्थिति है।

ऐसा क्यों हुआ? वैश्विक स्तर पर इन साम्राज्यवादी कंपनियों के बाजार पर कब्जे के कारण। इसमें उत्पादक और उपभोक्ता दोनों की जेब से पैसा निकलकर (एक को मुनाफे में हिस्सा घटाकर, दूसरे को दाम बढ़ाकर) इन साम्राज्यवादी कंपनियों के खाते में चला जाता है।

अनाजों की खरीद फरोख्त में लगी सबसे बड़ी कंपनियों को देखें।

कारगिल, यह न केवल खुद अनाजों को पैदा करवाती है (खेती) बल्कि यह भंडारण भी करती है और वैश्विक स्तर पर इनकी खरीद बिक्री भी करती है। साथ ही डेयरी, मांस उत्पाद को खरीदती–बेचती है और खाद्य उत्पादों को प्रसंस्करित करती है। **2007** में इसकी बिक्री **88** अरब डॉलर और मुनाफा **2.34** अरब डॉलर था जो कि पिछले वर्ष से **52** प्रतिशत अधिक था। जब दुनिया के कई देश दंगों/प्रदर्शनों को देख रहे थे, लोग भूखों मर रहे थे उस समय कारगिल ने घोषित किया कि उसका मुनाफा **2008** की पहली तिमाही में पिछले वर्ष इसी समय की तुलना में **86** प्रतिशत बढ़ा है।

अमेरिका की ही ए.डी.एम. (आर्थर डैनियल्स मिडलैन्ड्स) ने **2007** में **2.1** अरब डॉलर का मुनाफा कमाया जो कि **2006** की तुलना में **65** प्रतिशत अधिक था। यह दुनिया के कई हिस्सों में अनाज खरीदती है, बेचती है, भण्डारण करती है।

कारगिल की ही मोजेक कॉरपोरेशन दुनिया भर में पोटाश और फॉस्फेट की सप्लाई के बड़े हिस्से पर नियंत्रण रखती है। **2007** में इसका मुनाफा दो गुना हो गया (**2006** की तुलना में)। कनाडा की कनाडा पोटास कॉरपोरेशन ने **2006** की तुलना में **70** प्रतिशत अधिक मुनाफे के साथ **1** अरब डॉलर का मुनाफा **2007** में कमाया।

उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता है कि कृषि क्षेत्र में भी उद्योगों की तरह दैत्याकार बहुराष्ट्रीय कंपनियों का एकाधिकार है। यही कंपनियां अपने एकाधिकारी चरित्र के कारण पूरी दुनिया की कृषि को प्रभावित करती हैं।

सारणी–11

वर्श, मोन्सेन्टो, सिजेन्टा, कारगिल, ए.ड़ी.एम. (आर्थर डेनियल मिडलैंड्स) कम्पनियों का मुनाफा (दस लाख डालर में)

वर्ष	मोन्सेन्टो	सिजेन्टा	कारगिल	ए.ड़ी.एम.
2003	-23	248	1290	451
2004	367	352	1331	495
2005	255	622	2103	1044
2006	689	634	1537	1312
2007	993	1109	2343	2162

स्त्रोत : update series-16 July 2008

तालिका से पता चलता है कि मोन्सेन्टो **2003** में घाटे में थी। अगले चार सालों में उसका मुनाफा बढ़कर **993** मिलियन डॉलर हो गया। सिन्जेन्टा का पिछले पांच सालों में मुनाफा **4.5** गुना, कारगिल का लगभग **2** गुना, ए.डी.एम. का **4.5** गुना हो चुका है। छोटे मझोले किसान बर्बाद हो रहे हैं, मजदूर–गरीब किसान आबादी भुखमरी की ओर बढ़ रही है और एकाधिकारी कम्पनियों का मुनाफा कई गुना बढ़ चुका है।

8. कृषि उत्पादों में सट्टेबाजी

''शिकागो व्यापार एक्सचेंज ने **2008** की पहली तिमाही की अनाज और तैलीय बीज व्यापार की रिपोर्ट में **2007** की अन्तिम तिमाही की तुलना में **32** प्रतिशत की बढ़त को दर्ज किया। यह अतिरिक्त धन इस वर्ष मौसम खराब रहने की संभावनाओं के तहत सट्टेबाजों ने लगाया था न कि मक्का या गेहूं के किसानों ने अपने उत्पादों के दामों को बढ़ाने के लिए''

(by Nomi Prins, 20.06.08, http:" WWW. Commondreams.on) स्रोतः Update issue 16, July 2008)

रॉयटर्स (reuters) में एक सट्टेबाज की आत्मस्वीकारोक्ति निम्न प्रकार है–

> ''दुर्भाग्यवश मैं सोचता हूं कि जब लोग मालों की खरीद–फरोख्त करते हैं, तब मैं नहीं समझता कि वे समाज पर इसके पड़ने वाले प्रभाव की परवाह करते हैं''। यह बात गैरी कॉल्ट वॉम ने कही, जो कि एक हेज फण्ड, काल्टवाम एवं एसोसिट्स ऑरलेण्डो, फ्रलोरिडा के नाम से चलाते हैं जो कि अनाजों की खरीद–फरोख्त में निवेश करता है।
> आगे
> ''यह लोग जो करते हैं वह निवेश होता है और उनका काम पैसा बनाना होता है। अगर उन्हें लगता है कि कोई चीज मंहगी हो रही है तो वे उसका व्यापार करेंगे। वे इसके कारण अन्य कहीं होने वाली परेशानियों (दुःख तकलीफों) की चिंता नहीं करते हैं।''
>
> स्रोतः (**1.04.08 http:" www.reuters. com**)

विगत वर्षों में वैश्विक स्तर पर अनाजों के दामों में भारी उछाल ने एक बहुत बड़ी आबादी को भुखमरी के कगार पर पहुंचा दिया। अन्य कारकों के अलावा अनाजों की खरीद फरोख्त में सट्टेबाजी ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। कमोडिटी एक्सचेंजों में केवल एक ही दिन में गेहूं के दामों, कपास के दामों, मक्का के दामों में भारी उछाल देखे गये। इनके बाजार (अनाजों) के बड़े हिस्सों को सट्टा पूंजी ने नियंत्रण में ले रखा है।

वर्तमान विश्व में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सट्टा पूंजी अहम् भूमिका में है। साम्राज्यवादी युग में पूंजी, मजदूरों–मेहनतकशों को गहन कष्टों में धकेलती जाती है। पूंजी का चरित्र लगातार परोपजीविता की ओर बढ़ता जाता है। उत्पादन क्षेत्रों में निवेश की सम्भावनायें लगातार घटती जाती हैं। दैत्याकार विशाल पूंजी अपने संचय की समस्या को इसी प्रकार हल करती है।

निष्कर्ष

वर्तमान वैश्विक खाद्य संकट, के दूरगामी कारण साम्राज्यवादी युग में पूंजी के चरित्र और तदनुरूप उसकी कार्यप्रणाली से जुड़े हुए हैं। बीसवीं शताब्दी में कृषि का विकास जिस तरीके से हुआ है, उससे साम्राज्यवादी देशों में पहले औद्योगिक क्रान्ति से यान्त्रिकरण और बाद में मोटर यान्त्रिकरण, बीज व पौधों का चयन, उवर्रक, विशेषज्ञता आदि से कृषि में उत्पादकता, उत्पादन में जर्बदस्त वृद्वि हुई। पूंजी की अपनी कार्यप्रणाली के तहत इन देशों में कृषि से आबादी का क्रमशः विस्थापन होता गया खुद कृषि में मांग बढ़ने से उद्योगों का प्रसार हुआ। दूसरे देशों पर इनके कब्जे ने भी इनके उद्योगों के लिए मांग पैदा की। इसलिए कृषि क्षेत्र से विस्थापित आबादी क्रमशः उद्योगों में खपती गयी।

तीसरी दुनिया के गरीब देशों के सामने स्थिति नितान्त भिन्न थी। यह औपनिवेशिक जुए में लम्बे समय पिसे थे। इनके देश के संसाधनों की भारी लूट हुई थी। यहां की कृषि और उद्योग के विकास के रास्ते अवरुद्व थे। साम्राज्यवादी जुए से स्वतंत्रता हासिल करने के बावजूद इन्हें साम्राज्यवादी व्यवस्था के साथ ही एकाकार होना था।

तीसरी दुनिया के देशों में अधिकांश जमीनें सामंतों–भूस्वामियों के कब्जे में ही थी। स्वतंत्रता के पश्चात भी इनमें कोई क्रांतिकारी बदलाव नहीं हुआ। तत्कालीन परिस्थितियों (सर्वहारा क्रांतियों के युग में) यहां का कमजोर पूंजीपति वर्ग यह खतरा नहीं उठा सकता है।

इसका प्रभाव इन देशों के पूंजीवाद के चरित्र पर स्पष्ट तौर पर देखा जा सकता है। इन परिस्थितियों में कृषि में नई मांगों का पैदा होना (सीमित हद तक ही पैदा हुई) सम्भव नहीं हो सकता है। तदनुरूप उद्योग जो कि उच्च स्थिर पूंजी अनुपात पर खड़े थे, वे भी कृषि से विस्थापित आबादी को स्वयं में नहीं समेट सकते थे। कृषि में पूंजीवाद के क्रमशः विकास ने किसानों के एक बहुत बड़े हिस्से को कंगालीकरण में धकेल दिया।

अस्सी के दशक से वैश्विक स्तर पर साम्राज्यवादियों ने अपनी पूंजी संचय की समस्या को हल करने के लिए वैश्वीकरण का नारा दिया। वैश्वीकरण के तहत तीसरी दुनिया की कृषि को हासिल सब्सिडी, राज्य का प्रोत्साहन घटने लगा। लेकिन साम्राज्यवादी मुल्कों में यह जारी रहा है। ढांचागत समायोजन की नीतियों ने तीसरी दुनिया की कृषि उत्पादन को गिराने में भूमिका निभायी है।

वैश्वीकरण के दौर में साम्राज्यवादी कृषि और तीसरी दुनिया की कृषि (खासे असमान विकास वाली) को आमने–सामने खड़ा कर दिया। साम्राज्यवादी देशों के सस्ते अनाजों के सामने तीसरी दुनिया की खेती नहीं टिक सकती थी। परिणाम स्पष्ट तौर पर सामने आये। जो देश आत्मनिर्भरता की दहलीज पर पहुंच गये थे वे परनिर्भर बन गये, जहां स्थिति बुरी थी वहां और बुरी हो गयी।

इसी के साथ यह रुझान देखने में आता है कि वैश्विक स्तर पर **1985** से **2007** तक प्रति व्यक्ति उत्पादन आमतौर पर गिरता गया है।

तीसरी दुनिया में रहने वाली आबादी का बहुत बड़ा हिस्सा भयानक गरीबी में जीवन गुजारता है। एक अरब (लगभग) आबादी भुखमरी का शिकार है। कृषि आगतों में वृद्वि ने कृषि को मंहगा बनाया। तीसरी दुनिया के देश तमाम कृषि आगतों के लिए साम्राज्यवादी देशों पर निर्भर हैं। इसमें उनका एकाधिकार है। इसके परिणामस्वरूप किसानों के एक बड़े हिस्से के लिए कृषि कर्म दूभर होता चला गया। यह और गरीबी के समुद्र में समाते चले गये।

अनाजों के कम दामों ने किसान आबादी को, अर्न्तराष्ट्रीय बाजार में नगदी फसलों के अधिक मूल्य के कारण, उन्हें खाद्यान्न उत्पादन से विमुख किया। ढांचागत समायोजन नीतियों (**IMF, WB**) ने भी इसमें भूमिका निभायी। वैश्विक पैमाने पर खाद्यान्न उत्पादन की जगह नगदी फसलों की खेती का हिस्सा तेजी से बढ़ता गया है। भारत में भारी पैमाने पर किसानों की ट्टणग्रस्ता और आत्महत्याओं के पीछे यह मूल वजह रही है।

साम्राज्यवादियों द्वारा जैविक ईंधन के निर्माण ने बहुत बड़े पैमाने पर खाद्यान्नों को गरीब जनता से छीन लिया है। दूसरी ओर साम्राज्यवादी सट्टा पूंजी ने अनाजों के दामों में भारी उतार–चढ़ावों के कारण बहुत बड़ी आबादी भुखमरी के दलदल में झोंकी जा रही है।

2005–09 के समयान्तराल में अनाजों के दामों में भारी उछाल के पीछे जैविके ईंधन, सट्टाबाजारी मुख्य रूप से तात्कालिक तौर पर जिम्मेदार हैं। ऐसा नहीं है कि विश्व में खाद्यान्न उपलब्धता इतनी नहीं है कि लोग भुखमरी की हालत में पहुंचें। लेकिन यह तात्कालिक कारण भी साम्राज्यवाद की सामान्य गतिकी से ही जुड़े हुए हैं।

वैश्विक खाद्यान्न संकट का साम्राज्यवादी पूंजी के पास कोई समाधान नहीं है और यह उनकी चिंता का विषय भी नहीं है। पूंजी अपने मुनाफे से ही संचालित होती है। सर्वहारा, वर्ग व मेहनतकश जनता की ओर से कोई गम्भीर चुनौती मिलने पर ही यह कुछ राहतों के विषय में सोचती है, लेकिन केवल तात्कालिक तौर पर।

इस समस्या का समाधान सर्वहारा वर्ग की विचारधारा, राजनीति ही प्रस्तुत कर सकती है। इस समस्या का समाधान शोषण–गैरबराबरी का खात्मा करके ही सम्भव है।